शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह फरवरी, 2023

अष्ठम वर्ष अंक – 9

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक :- भाषा सिखाने की विधियां – भाषा का मौखिक और मूर्त रूप

काफी दिनों से सोच रहा हूं कि भाषा की शिक्षा के संबंध में आप सब से कुछ बात करूं. अन्य कोई भी विषय सीखने के लिये भाषा का ज्ञान आवश्यक है, इसलिये प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा के शिक्षण पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य है.

मैंने प्रायः देखा है कि स्कूलों में भाषा शिक्षण के नाम पर एक बच्चे को पाठ्य पुस्तक लेकर कक्षा के सामने पाठ पढ़ने को कहा जाता है, और बाकी बच्चों को उसके पीछे पाठ को दोहराने को कहा जाता है. इसके अतिरिक्त पाठ्य पुस्तक में लिखे हुए पाठ को कॉपी में लिखना आदि सिखाया जाता है. भाषा सिखाने में हमारा प्रयास अक्सर वर्णमाला सिखाने में, बारहखड़ी रटाने में, व्याकरण के नियम समझाने में और शब्दो के अर्थ रटाने में रहता है. उच्चारण पर भी बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है. आइये विचार करते हैं कि क्या भाषा सिखाने का यही तरीका सर्वोत्तम है या भाषा किसी अन्य तरीके से बेहतर सिखायी जा सकती है.

-डॉ. आलोक शुक्ला, प्रमुख सचिव, छतीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

भाषा की उत्पत्ति ध्वनि से हुयी है-भाषा के दो स्वरूप हैं - मौखिक और लिखित. लिखित भाषा को हम लिपि भी कह सकते हैं. भाषा की उत्पत्ति लेखन से नहीं बल्कि, ध्वनियों के माध्यम से अपने विचार अन्य तक पहुंचाने के प्रयास से हुई है. कहते हैं कि मधुमक्खियों से लेकर डॉल्फिन तक एक दूसरे के साथ विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के माध्यम से बातचीत करते हैं. मनुष्य में भी भाषा का जन्म ध्वनियों, हावभाव और बॉडी लैंगुएज के व्दारा विचार संप्रेषण के प्रयासों से हुआ है. भाषा की उत्पत्ति मौखिक ही है. भाषा शब्द भाष् धातु से बना है, जिसका अर्थ ही बोलना है.

बच्चा भाषा कैसे सीखता है-बच्चे जो कुछ सुनते हैं, वही दोहराते है. बच्चा सबसे अधिक समय अपनी मां के साथ बिताता है. जब बच्चे को बोलना बिल्कुल भी नहीं आता है उस समय भी मां बच्चे से लगातार बातें करती है. मां बच्चे को इशारे से बताती है कि वह उसकी मां है, और अक्सर 'मां' शब्द का उच्चारण भी करती है. इसीलिये बच्चा अक्सर पहला शब्द 'मां' ही बोलता है. इसी प्रकार बच्चा 'बाबा', 'भइया', 'पानी', 'खाना' जैसे शब्द बोलना सीखता है. जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, वह अन्य लोगों के बोले हुये शब्दों को सुनकर उनका अर्थ समझने का प्रयास करता है और धीरे-धीरे सार्थक वार्तालाप प्रारंभ कर देता है. भाषा सीखने की प्रक्रिया में 'सुनना' अत्यंत महत्वपूर्ण क्रिया है. इसीलिये आपने देखा होगा कि जो बच्चे जन्म से बहरे होते हैं वे गूंगे भी होते हैं. सुन नहीं सकने के करण वे बोलना भी नहीं सीखते हैं.

बच्चे की प्रारंभिक बातचीत माता-पिता, भाई-बहन और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ होती है. धीरे-धीरे बच्चा आस-पड़ोस के लोगों से बातचीत करना सीखता है. इसी प्रकार खेल-खेल में बच्चा भाषा के कठिन स्वरूप को भी सीख जाता है. ध्यान देने की अवश्यकता है कि इस प्रकार भाषा सीखने में बच्चे को न तो वर्णमाला रटनी होती है न ही शब्दों के अर्थ को रटना होता है, बल्कि सार्थक वार्तालाप से बच्चा भाषा का ज्ञान अर्जित कर लेता है. आप सब यह बात तो स्वीकार करेंगे ही कि जब बच्चा पहली कक्षा में प्रवेश लेता है और पहली बार स्कूल आता है तब भी उसे भाषा का इतना ज्ञान तो होता ही है कि वह आपस में और आपके साथ बातचीत कर सके. हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम इसी बातचीत को आगे बढ़ाते हुए उसमें धीरे-धीरे ऐसे शब्दों, वाक्यों आदि का समावेश करते चलें जो बच्चे को पहले से नहीं आते हैं.

भाषा सिखाने के लिए बातचीज करना सबसे महत्वपूर्ण है. कक्षा में बहुधा इससे ठीक उल्टी बात होती है. कक्षा में अक्सर बच्चों से चुप रहने के लिए कहा जाता है. पाठ्यपुस्तक के पाठ को दोहराते रहना रटंत की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है. इस प्रकार पाठ को बिना समझे दोहराना नीरस भी होता है, और बच्चों को भाषा सीखने के लिये बिल्कुल भी प्रेरित नहीं करता. भाषा का उद्देश्य ही विचारों का संप्रेषण है. इसलिये जब तक बच्चों को सार्थक वार्तालाप के लिये उत्साहित और प्रेरित नहीं किया जायेगा, उन्हें भाषा का शिक्षण रुचिकर नहीं लगेगा.

वर्णमाला और बारहखड़ी रटाने से कोई लाभ नहीं होता- भला सोचिये कि वर्णमाला या बारहखड़ी को रटना बच्चों के लिये कितना नीरस और दुष्कर कार्य है. बच्चे शायद यह सोचते होंगे कि इस प्रकार बर्णमाला और बरहखड़ी को रटने से कोई लाभ नहीं है, क्योंकि उनका उपयोग वे अपनी वार्तालाप में नहीं करते हैं. क्या बेहतर यह नहीं होगा कि हम बच्चों से उन विषयों पर बात करें जो उन्हें रुचिकर लगते हैं, और इसी प्रक्रिया से हम उन्हें भाषा सिखायें. यह प्रक्रिया सामान्य रूप से समाज में भाषा सीखने की प्रक्रिया से मिलती-जुलती होगी और अधिक उपयोगी होगी. हम बच्चों से उनके उनके परिवार और परिवेश के संबंध में बात कर सकते हें. बच्चों से पूछें कि उन्होंने आज सुबह या कल क्या किया था, घर में भोजन क्या बना था, वे कौन से खेल खेलते हैं, आदि. इस प्रकार की बातें बच्चों के लिए रुचिकर होंगी और हर बच्चा बेहतर तरीके से कक्षा की गतिविधियों में भाग लकर भाषा सीख सकेगा. यह प्रक्रिया बच्चों को रटंत से दूर ले जाएगी.

कक्षा में मौखिक भाषा सिखाने के लिये कुछ गविधियों के सुझाव निम्नानुसार हैं -

1. बच्चों से उनके परिवेश के बारे में प्रश्न करना.
2. बच्चों से कहें कि वे एक दूसरे से उनके परविार के बारे मे जानकारी लें और फिर कक्षा के समक्ष बताएं.
3. बच्चों से कहा जाए कि वह कोई कहानी सुनाएं.
4. बच्चों से किसी महापुरुष, किसी खेल, किसी त्योहार आदि के संबंध में बोलने के लिये कहा जाए.
5. शिक्षक कक्षा में बच्चों को कोई कहानी सुनाएं और फिर उस कहानी के संबंध में प्रश्न करें.
6. कक्षा की दीवारों पर लिखी कहानियों, आदि का उपयोग भी बच्चों के साथ सार्थक बातचीत करने में किया जा सकता है.
7. कक्षा की दीवारों पर बने चित्रों पर भी बातचीत की जा सेकती है.
8. हम कक्षा में कोई पोस्टर या मुस्कान लाइब्रेरी में उपलब्ध पुस्तकों लाकर उनके माध्यम से भी बच्चों से बातचीत कर सकते हैं.

भाषा के खेल- इन गतिविधियों को करने से हम बच्चों को रटंत से दूर ले जा सकेंगे. भाषा की बेहतर समझ बच्चों में विकसित होगी. धीरे-धीरे बच्चों के साथ भाषा के खेल भी खेले जा सकते हैं. उदाहरण के लिए समानार्थी और विरुद्धार्थी शब्दों के खेल. शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने के खेल. मुहावरों आदि के खेल. स्क्रेबल जैसे खेल जिनके व्दारा बच्चों को शब्द बनाया सिखाया जा सकता है.

हावभाव और बॉडी लेंगुएज का महत्व-भाषा के मूर्त रूप को समझाने के लिए हमें बच्चों के साथ हाव-भाव और बॉडी लैंग्वेज के संबंध में भी बात करनी होगी. एक ही शब्द को अलग-अलग हावभाव और बॉडी लैंग्वेज के साथ बोलने पर उसके अर्थ अलग-अलग हो सकते हैं. उदाहरण के लिए यदि हम 'अच्छा' शब्द का उपयोग समान्य रूप से उपयोग करें तो उसका साधारण अर्थ है – ठीक, भला, उपयुक्त आदि, परंतु यदि हम 'अच्छा' शब्द का उच्चारण प्रश्नवाचक रुप में करें तो उसका अर्थ यह होगा कि हम प्रश्न कर रहे हैं कि बताई गई बात सही है अथवा नहीं. इसी प्रकार हम 'अच्छा' शब्द को उच्चारण और हाव-भाव बदलकर व्यंग्यात्मक भी बना सकते हैं. आपने समझ ही गये होंगे कि हाव-भाव और बॉडी लैंग्वेज से एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ निकल सकते हैं. इसलिये बच्चों को हाव-भाव ओर बॉडी लेंगुएज के बारे में सिखाना बहुत महत्वपूर्ण है.

उच्चारण और व्याकरण पर बहुत अधिक फोकस करने का विपरीत प्रभाव हो सकता है-मैने देखा है कि हम अक्सर कक्षा में बच्चों को सही उच्चारण सिखाने पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं. दरअसल कौन सा उच्चारण सही है यह अपने आप में विवाद का विषय हो सकता है. उच्चारण बहुधा परिवेश के साथ बदल जाता है. हाल ही में मैं एक स्कूल में गया. वहां एक बच्चे के साथ बातचीत में मैने उसके पिता का नाम पूछा. बच्चे ने कहा कि उसके पिता का नाम 'परेम' है. वहां उपस्थित शिक्षिका ने तत्काल बच्चे से कहा कि 'परेम' नहीं 'प्रेम' बोलो, परन्तु बच्चा लगातार 'परेम' ही बोलता रहा. मैने देखा कि वह बच्चा अन्य शब्दों का उच्चारण सही कर रहा था, परन्तु 'प्रेम' को 'परेम' ही बोल रहा था. तब मुझे लगा कि शायद उसके घर में उसके दादा-दादी उसके पिता को 'परेम' ही कहते होंगे, इसलिये उसे 'परेम' ही सही लगता है. आपने देखा होगा कि एक ही शब्द के उच्चारण अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग

होते हैं. बिहार में अक्सर 'ड़' वर्ण का उच्चारण 'र' किया जाता है. इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी उच्चारण बदल जाता है. मानक हिन्दी में मानक उच्चारण भी निर्धारित हैं, और शायद आगे की कक्षाओं में विद्यार्थी यह मानक उच्चारण सीख भी जायेंगे, परन्तु प्रारंभिक कक्षाओं में मानक उच्चारण पर बहुत अधिक आग्रह करने से भाषा सीखना अरुचिकर और कठिन हो सकता है. मेरा मानना है कि बच्चे को उसके परिवेश के अनुसार उच्चारण करने देना चाहिये, परन्तु शिक्षक जब बच्चे के साथ बात करें तो स्वयं मानक उच्चारण का ही प्रयोग करें. ऐसा करने से धीरे-धीरे बच्चा मानक उच्चारण सीख जायेगा. यही बात व्याकरण के लिये भी है. हमने भाषा का उपयोग करने के लिये व्याकरण के नियम नहीं रटे थे, बल्कि दूसरों से सुनकर हम स्वयमेव सही व्याकरण का उपयोग करने लगे. शिक्षक यदि हम समय बच्चे को व्याकरण के नियम रटाने और उसकी बातचीत में टोका-टोकी करने का प्रयास न करें, परन्तु स्वयं सही व्याकरण का उपयोग कक्षा में की जाने बाली बातचीत में करें तो बच्चा स्वयं ही सही व्याकरण सीख जायेगा.

लिखित भाषा- मौखिक भाषा के साथ लिपि सिखाना आवश्यक है, जिससे बच्चा पुस्तकों में उपलब्ध ज्ञान के भंडार का उपयोग कर सके और स्वयं भी लिखकर अपने विचार सारे संसार तक पहुंचा सके. लिपि सीखने में पढ़ना और लिखना दोनो सिखाना होगा. इनके लिये भी बहुत सी तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है परंतु उनके बारे में अगली बार बात करेंगे.

अंत में आंकलनकर्ताओं से कुछ बात- छत्तीसगढ़ में बच्चों स्कूलों में हम सबने मिलकर 'सुघ्घर पढ़वइया' योजना प्रारंभ की है. इस योजना के तहत आप अपने आस-पास के अन्य स्कूलों का आंकलन करने जायेंगे. मेरा आंकलनकर्ताओं से एक ही आग्रह है कि आंकलन का उद्देश्य फेल करना नहीं बलिक पास होने का अवसर प्रदान करना है. आंकलन करने वालों को सबसे पहले बच्चों से मित्रता करनी होगी, और उन्हें उनकी पसंद की गतिविधियां चुनने का अवसर देना होगा. ध्यान रखिये की इस सबके केन्द्र में बच्चे हैं, न कि हम सब. बच्चों से बात करें और फिर यह तय करें कि किस प्रकार की गतिविधि से आप बच्चों को वह करने के का अवसर दे पायेंगे तो वे कर सकते हैं. उदाहरण के लिये भाषा के आंकलन में एक गतिविधि सुझायी गयी है कि एक डब्बे में सभी बच्चों के नाम की पर्चियां डाल दें और फिर बच्चों से एक-एक पर्ची निकाल कर उसपर लिखा नाम पढ़ने को कहें और उस बच्चे के संबंध में कुछ बताने को कहें. इस गतिविधि में बच्चे के पास कोई 'चॉइस' नहीं है. हो सकता है कि बच्चा उस शब्द को न पढ़ पाये जो उस पर्ची पर लिखा है, या उस बच्चें के बारे में उसे विशेष जानकारी नहीं है इसलिये उसके बारे में वह कुछ न बोल पाये. इसके स्थान पर यह भी तो किया जा सकता है कि हम बच्चों से कक्षा में उपस्थित अपनी पसंद के किसी भी बच्चे के बारे में कुछ कहने के लिये कहें. इस प्रकार बच्चे को 'चॉइस' मिल जायेगी और शायद वह बेहतर प्रदर्शन कर पायेगा. यह केवल एक उदाहरण है. तात्पर्य केवल इतना है कि आंकलनकर्ता मशीनी तरीके से उन्हें दी गई आंकलन पुस्तिका के टूल्स का उपयोग न करें, बल्कि उसके पीछे के भावार्थ को समझ कर बच्चों की वास्तविक क्षमताओं का आंकलन उन्हें अधिक से अधिक 'चॉइस' देकर करें. हमारा उद्देश्य बच्चों को फेल करना नहीं है बल्कि उन्हें बेहतर करने की प्रेरणा देना है.

आप इस ब्लॉग का पठन http://alokshukla.com/Blog/Blog.aspx में जाकर कर सकते हैं और अपने कमेन्ट भी पोस्ट कर सकते हैं

(साभार alokshukla.com)

इस आलेख को पहले स्वयं ध्यान से दो तीन बार पढ़ें. फिर संकुल की बैठक में या अपने पी एल सी समूह में आपस में इस आलेख पर चर्चा एवं विमर्श करें. बच्चों को भाषा सिखाने या सीखने में सहयोग देने हेतु आपके द्वारा किस पद्धति का उपयोग किया जा रहा है, और क्या इससे बच्चे सभी या स्वाभाविक तरीके से भाषा सीख पा रहे हैं, इस पर विचार करें.
इस आलेख को पढने का बाद आप सभी अपने कक्षा, अपने संकुल में भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु अपने अध्यापन शैली में क्या-क्या बदलाव लाएंगे, इस पर मंथन करें एवं रणनीति बनाकर कार्य प्रारंभ करें. बच्चों के भाषाई कौशल में आ रहे बदलाव को नोट करते हुए सुघ्घर पढ़वईया कार्यक्रम के अंतर्गत सभी शालाओं को प्लेटिनम अवार्ड के लिए निर्धारित स्तर तक पहुँचाने हेतु सभी आवश्यक प्रयास करें.
इस दिशा में आपके द्वारा किये जा रहे कार्यों को संबंधित ब्लॉग में एवं चर्चा पत्र टीवी के माध्यम से साझा करने https://t.me/+9r6plSx5PX5hMDI1 से जुड़कर अपने कार्यों के वीडियो क्लिप भेजें.

एजेंडा दो:- बच्चों के पढ़ने में 'धारा प्रवाह' की दक्षता विकसित करना।

पिछले माह के चर्चा पत्र में बच्चों की लिखित सामग्री को कक्षा प्रक्रिया में इस्तेमाल करने के संदर्भ में संक्षिप्त नोट पढ़ा था। पढ़ने का उद्देश्य समझना होता है और पढ़कर समझने में बहुत सारी प्रक्रियाएं भूमिका में होती हैं। इस बार पढ़कर समझने में धारा प्रवाह की भूमिका पर बात करते हैं। पढ़ने में धारा प्रवाह शब्द को अक्सर गति से जोड़ लिया जाता है और हमारी कक्षा प्रक्रिया में यह सोचकर अनदेखा किया जाता है कि एक बार जब बच्चे डिकोडिंग सीख लेते हैं तो वे स्वतः ही इसे विकसित कर लेंगे। पढ़ने में धारा प्रवाह केवल गति तक ही सीमित नहीं है । यह शुद्धता, उचित गति और हाव-भाव के साथ-साथ पढ़ने की क्षमता है। मौखिक बातचीत के दौरान अर्थ बनाने में कई चीजें योगदान करती हैं जैसे, वाक्य की संरचना, शब्दावली, संदर्भ को समझना आदि ।

अर्थ निर्माण में धारा प्रवाह की भी भूमिका है, जिस तरह से हम बोलते हैं उसी से अर्थ तय होता है। जब हम सुनते हैं तो हम सभी ध्वनियों को संरचनात्मक रूप से एक बार में समग्र रूप लेते हुए सुनते हैं, न कि टुकड़ों में। यही कारण है कि हम जो सुनते हैं उसे समझ सकते हैं किन्तु लिखित भाषा की सीमा यह है कि इसमें कोई ध्वनि नहीं है। जब तक पाठ को इस तरह न पढ़ा जाये जैसा कि बोला जाता है तब तक उस अर्थ तक नहीं पहुँच सकते है। इसका मतलब है कि शुद्धता, उचित गति और हाव -भाव के साथ पढ़ना। छोटे बच्चे अक्सर शब्दों को अक्षरों में तोड़कर पढ़ने का कार्य करते हैं । यह अर्थ बनाने में बाधा डालता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनका अक्षर ध्वनि संबंध में स्वचालितता विकास नहीं हुआ होता है। इसलिए हमें धारा प्रवाह विकसित करने के लिए गतिविधियों को शामिल करना चाहिए। यह अलग -अलग स्तर की कक्षा में भिन्न होगा। शुरूआती ग्रेड में हम मुखर वाचन (Read Aloud) व हाव-भाव के साथ पढ़ना, जबकि बड़ी कक्षाओं में कहानी या पाठ से संवाद बनाना एवं प्रस्तुत करना, नाट्य रुपान्तरण कर प्रस्तुत करना, कविता पाठ आदि शामिल कर सकते हैं जिनके लिए उन्हें बार-बार पढ़कर अभ्यास करने की आवश्यकता होती है । भाषा शिक्षण में एक लक्ष्य यह भी है कि बच्चे बिना अटके किसी रचना का धारा-प्रवाह पठन कर पाएं और उससे संबंधित प्रश्नों का जवाब दे पाएं । धारा-प्रवाह पठन और समझ के बीच एक सकारात्मक संबंध है।

प्राथमिक कक्षाओं के लिए कक्षा 1 से 5 तक की पाठ योजना दी गई है जिसमें मुख्य रूप से केंद्र में रखे जाने वाले चार कौशल मौखिक अभिव्यक्ति, डिकोडिंग, पठन और लेखन पर कार्य किया गया है। इन पाँच दिवसीय पाठ योजनाओं में बच्चों के पढ़ने में धारा प्रवाह विकसित करने की कुछ प्रक्रियाएँ भी शामिल हैं। माध्यमिक कक्षाओं हेतु इस माह पूर्व के अध्यायों की रिविजन पाठ योजना दी गई है। पाठ को केंद्र में रखकर अलग-अलग सीखने के प्रतिफलों पर कार्य करने की प्रक्रिया के साथ ही बुनियादी और पिछली कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ केन्द्रित बच्चों के पढ़ने में धारा प्रवाह विकसित करने की भी कुछ प्रक्रियाएँ भी है ।

पाठ योजना को विस्तार से देखने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें। Link:-
इस माह प्रत्येक कक्षा के जिन पाठों पर कार्य किया जाना है वे इस प्रकार हैं :-

क्रमांक	कक्षा	इस माह में कार्य किए जाने वाले पाठों के नाम
1	पहली	दौड़, इनको भी जानो
2	दूसरी	साहसी बनो
3	तीसरी	कविता का कमाल , बालसभा
4	चौथी	इंसाफ, सड़क सुरक्षा (जेब्रा क्रासिंग)
5	पाँचवी	बाबा अंबेडकर, चमत्कार
6	छठवीं	छत्तीसगढ़ दर्शन, रिविजन चैप्टर 1 से 5 तक
7	सातवीं	रिविजन चैप्टर 1 से 7 तक
8	आठवीं	यातायात सुरक्षा, रिविजन चैप्टर 1 से 7 तक

एजेंडा तीन: इतना तो हम कर सकते हैं ! फिर ये स्थिति क्यों ?

Sample: Reading test (Hindi)*

Std II level text

सावन का महीना था। आसमान में बहुत काले-काले बादल छाए थे। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। मुझे झूला झूलने का मन किया। बड़े भैया एक मोटी सी रस्सी लेकर बाहर आए। भैया ने रस्सी को पेड़ से लटकाकर झूला बनाया। सब ने मिलकर खूब झूला झूला। बाकी बच्चे भी आकर मज़े से झूलने लगे। झूलते-झूलते रात हो गई।

Std I level text

बग़ीचे में एक पेड़ है।
पेड़ पर एक तोता रहता है।
तोते का रंग हरा है।
वह लाल टमाटर खाता है।

Letters

ल प स
क ग
ड ब म
ट झ

Words

लाल दूध
पैर
तेल किला
मोर जूता
कुल
पानी मौका

Sample: Arithmetic test

Number recognition 1–9	Number recognition 11–99	Subtraction	Division
1 4	51 83	46 − 29, 63 − 39	7)879(
7 3	37 65	47 − 28, 45 − 17	6)824(
6 9	55 26	92 − 76, 84 − 57	8)985(
5 2	91 43	52 − 14, 66 − 48	4)517(
	36 27		

हमारी कक्षाओं में बच्चे आठ वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करते हैं. स्कूलों में सीखने के लिए ढेर सारी सुविधाएं, सपोर्ट के लिए बहुत से स्ट्रक्चर उपलब्ध हैं. प्रत्येक कक्षा में क्या-क्या सीख लेना चाहिए यह भी तय है. असर सर्वे में हम चयनित गाँवों में चयनित बच्चों से केवल ऊपर दिए गए पैटर्न में सवाल पूछते हैं. असर सर्वे में हमारी स्थिति इस प्रकार आई है-

कक्षा तीन के 20.7% बच्चे ही कक्षा दो के स्तर का पाठ पढ़ पाते हैं. कक्षा पांच के 52.7% बच्चे एवं कक्षा आठ के 81.1% बच्चे कक्षा दो के पाठ पढने के स्तर पर हैं, बाकी बच्चों को हम इतने वर्षों में भी पढने के लिए सक्षम नहीं बना पाए हैं जबकि निपुण भारत में 100% बच्चों को पढ़ना आ जाना चाहिए.
कक्षा तीन के 15.8% बच्चे ही गणित में घटाव के सवाल हल कर पाते हैं. कक्षा पांच के 24.9% बच्चे ही भाग के सवाल हल कर पाने के स्तर पर हैं. वहीं कक्षा आठ के 41.1% बच्चे घटाव के सवाल कर पा रहे हैं जबकि निपुण भारत में 100% बच्चों को ये सब करना आ जाना चाहिए.

अपने संकुल के मेंटर्स के साथ सभी शिक्षक आपस में चर्चा कर तय करें कि कैसे आपके संकुल में आगामी दो तीन माह में सभी बच्चों को ऊपर दिए गए टूल में दिए गए सवालों जैसे सवाल देकर अभ्यास करवाते हुए सभी को दक्ष एवं सक्षम बनाया जा सकता है?

एजेंडा चार: शाला स्तर पर इंटरनेट का रिचार्ज एवं प्रिंट-रिच वातावरण

सभी प्राथमिक से लेकर हायर सेकन्डरी स्तर की शालाओं को इस वर्ष इंटरनेट रिचार्ज के लिए बजट उपलब्ध करवाया गया है. इस बजट से स्कूल अपने आनलाइन कार्यों के लिए डाटा का उपयोग कर सकेंगे. स्कूल तय कर इस डाटा-पैक का रिचार्ज करवा सकते हैं. सभी स्कूल उनको उपलब्ध बजट का तत्काल उपयोग करने हेतु डाटा-पैक ले लेंगे. इन्टरनेट का उपयोग मुख्यतः निम्नलिखित कार्यों हेतु किया जा सकेगा-

1. स्कूल को विभिन्न जानकारियों की आनलाइन प्रविष्टि करने हेतु
2. बच्चों को इंटरनेट के माध्यम से रोचक जानकारियाँ ढूंढकर साझा कर सीखने में सहयोग देने
3. स्व-अध्ययन एवं विभिन्न आनलाइन कोर्सेस से जुड़ने एवं उन्हें समय पर पूरा करने हेतु
4. स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से आनलाइन कक्षाओं को देखने एवं प्रसारण करने
5. विभिन्न वर्चुअल बैठकों एवं वेबीनारों में शामिल होने एवं जानकारी साझा करने
6. ईमेल, फेसबुक एवं अन्य सोशियल मीडिया में अपने स्कूल को शामिल करने में
7. विभिन्न जानकारियों को गूगल फॉर्म के माध्यम से साझा करने हेतु

एजेंडा पांच: सुघ्घर पढवईया योजना: अद्यतन स्थिति

राज्य में कोरोना के बाद स्कूलों में बच्चों के सीखने की दशा और दिशा में शिक्षकों की ओर से स्व-पहल करने के उद्देश्य से दिनांक 14 नवंबर, 2022 को प्रारंभिक कक्षाओं के लिए माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी द्वारा "सुघ्घर पढवईया योजना" लागू की गयी है . योजना पूर्ण रूप से स्वैच्छिक रखी गयी है लेकिन देखने वाली बात यह है कि इस योजना के लांच होने के बाद जब पोर्टल बनाया गया तो लगभग एक माह के भीतर ही हमारे राज्य के पचास प्रतिशत से अधिक शालाओं ने अपना पंजीयन कर चुनौती दे दी है . कुछ शंकाओं की वजह से बहुत सी शालाएं अभी सामने नहीं आई हैं पर जैसे ही इन शंकाओं का समुचित समाधान जमीनी स्तर पर कर लिया जाएगा, वे भी निश्चित रूप से इस योजना से जुड़ सकेंगे . इस योजना में स्कूलों का वास्तविक आकलन किया जाना तय किया गया है और आकलन के मामले में राज्य बहुत गंभीर है इसलिए पूरी तैयारी के बाद ही इस योजना में निरीक्षण किया जाना तय किया गया है

स्कूलों को तय आदर्श स्थिति तक पहुंचने के लिए पर्याप्त समय भी दिया जा रहा है और उनके मांग के आधार पर ही थर्ड पार्टी दो से तीन दिन शाला में रहकर आकलन कर सकेगी . इसके लिए भी टीम को तैयार किया जा रहा है.

इस योजना को बनाते समय निम्नलिखित बातों को ख़ास तौर पर ध्यान में रखा गया है-

1. योजना की डिजाइन में शिक्षकों के उस मांग को ध्यान में रखा गया है कि आप हमें अपने तरीके से पढाने की स्वतंत्रता दें हम परिणाम लाकर दिखाएंगे .
2. बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु उनकी नियमित उपस्थिति सबसे अनिवार्य घटक है . अभी हमारे स्कूलों में औसत उपस्थिति लगभग सत्तर प्रतिशत होती है जिसे सुधारा जाना अत्यंत आवश्यक है . इसलिए इस योजना में सर्टिफिकेशन के लिए 98% उपस्थिति अनिवार्य रखी गयी है .
3. इस योजना में राज्य की ओर से कुछ लर्निंग आउटकम के रूप में कुछ प्रमुख कसौटियां तय की गयी हैं जिसे स्कूल के सभी बच्चों को हासिल करवाना स्कूल के लिए लक्ष्य है . इन कसौटियों या लर्निंग आउटकम को कैसे और कब तक प्राप्त किया जाना है, यह स्वतंत्रता स्कूल के पास है . स्कूल को एक टीम के रूप में इस योजना में शामिल होने स्कूल के सभी अकादमिक सदस्यों की सहमति आवश्यक है .
4. योजना के अंतर्गत शामिल होकर अपने स्कूल को कसौटी के लायक तैयार कर थर्ड पार्टी आकलन के लिए आमंत्रण की तिथि का निर्धारण भी स्कूलों को तय करने की स्वतंत्रता है . स्व-आकलन एवं अपने आसपास के स्कूल से पियर आकलन कर अपने आपको पूरी तरह से संतुष्टि मिलने पर ही थर्ड पार्टी आकलन के लिए टीम को आमंत्रित करें .
5. इस योजना की खासियत यह है कि इसमें स्कूलों में आपस में कोई प्रतिद्वंदिता नहीं है . राज्य की ओर से एक क्रायटेरिया तय किया गया है . इस क्रायटेरिया में जितनी भी शालाएं शामिल होंगी उन सभी को पुरस्कृत किया जा सकेगा . अतः अपने आसपास के स्कूलों को भी सहयोग कर उन्हें तैयार कर अपने अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक स्कूलों को शामिल कर सकते हैं . स्कूल हर बार अपने पूर्व स्थिति से अपने आपको बेहतर करने का प्रयास करेंगे अर्थात अपने आप से ही उनकी प्रतियोगिता होगी अन्य से नहीं !
6. योजना को बहुत ही लचीला बनाया गया है . स्कूलों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर आवश्यक संशोधन किए गए हैं . अनियमित उपस्थिति एवं लर्निंग डिसेबिलिटी वाले बच्चों को आकलन के दायरे से बाहर रखकर उन्हें भी मुख्यधारा में लाने की दिशा में विशिष्ट प्रयास के अवसर सुलभ करवाए जा रहे हैं.
7. यहाँ इस बात को हाईलाईट करने की आवश्यकता है कि इस योजना में सभी शालाओं को शामिल होना है क्योंकि कोई भी स्कूल ऐसा नहीं होगा जो अपने बच्चों की उपलब्धि में सुधार करना नहीं चाहेगा . हर स्कूल को अपने वर्तमान स्तर से ऊपर उठने हेतु इस योजना में प्रयासरत रहना होगा . योजना में अपना पंजीयन करने पर आपको विभिन्न सुविधाएं जैसे On demand training, online courses, help videos आदि उपलब्ध हो सकेंगे जिसके आधार पर आप अपनी तैयारी कर सकेंगे.

8. इस योजना में विगत एक माह के भीतर राज्य के लगभग पचास प्रतिशत से अधिक शालाओं ने अपना पंजीयन कर लिया है . जो शालाएं छूटी हुई हैं उन्हें शायद यह शंका है कि एक एक बार चुनौती देने पर टीम आकर उनके बच्चों की जाँच करेंगी . ऐसा बिलकुल भी नहीं है, इसमें दो चरण है-पहला योजना में अपना पंजीयन कर चुनौती के लिए अपने आपको सामने लाना और दूसरा जब स्कूल चुनौती का मुकाबला करने स्वयं को तैयार कर लें तब थर्ड पार्टी को आमंत्रित करना होगा. इस शंका के दूर होते ही सभी शालाएं इस योजना से जुड़ सकेंगी.
9. थर्ड पार्टी आकलन के लिए आमंत्रित करने के बाद जब शालाएं अपना स्व-आकलन एवं पियर आकलन करते हैं और अपने आपको निर्धारित क्रायटेरिया से कुछ पीछे पाते हैं तो उन्हें थर्ड पार्टी आकलन को कुछ और विलंब से करने हेतु डिलीट बटन दबाने की सुविधा दी गयी है ताकि तैयारी हेतु और समय मिल सके.
10. इसी प्रकार यदि प्रथम आकलन में स्कूल को सिल्वर या गोल्ड सर्टिफिकेट मिलता है तो वे थोड़ी और तैयारी कर कुछ समय बाद प्लेटिनम सर्टिफिकेट के लिए थर्ड पार्टी आकलन की मांग कर सकते हैं जिलों, विकासखंड एवं संकुल स्तरीय अधिकारी तत्काल अपने जिले की स्थिति की समीक्षा कर शालाओं में इस योजना के प्रति व्याप्त शंकाओं का उचित समाधान कर सभी शालाओं से आगामी एक दो दिनों में अपना पंजीयन अवश्य करवाते हुए अपने आपको बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु चुनौती लेने वाले टीम में शामिल का मेहनत करना प्रारंभ करें . अपने वर्तमान स्थिति से सुधार करते हुए अपने आसपास की सभी शालाओं को इस योजना में आगे बढ़कर पुरस्कार लेने हेतु प्रेरित करें.

एजेंडा छह: गणित - सीखने के नुकसान की भरपाई हेतु कक्षा में गणित विषय पर कार्य कैसे करें?

पिछले चार माह से गणित विषय में बच्चों को हुए नुकसान की भरपाई हेतु बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) के साथ-साथ उसकी भरपाई (recovery) हेतु कक्षावार पाठ योजनाओं के लिंक के संलग्न किए जा रहे हैं। साथ ही संकुल समन्वयकों से यह अपेक्षा की जा रही है कि वे प्रतिमाह गणित की पाठ योजना पर चर्चा, विश्लेषण और शिक्षकों को अपनी कक्षा के अनुसार पाठ योजना को संदर्भित और प्रभावी बनाने के तरीके पर अकादमिक बैठक आयोजित करें और उसके अनुरूप संकुल स्तर पर बनाई गई पाठ योजनाओं पर शिक्षक साथी कक्षा में कार्य करें। कुछ जगहों पर लगातार संकुल बैठकों में इन मुद्दों पर बात हो रही है पर अभी भी अधिकतम जगहों पर इन मुद्दों से संबन्धित चर्चा की शुरूआत भी नहीं हो पायी है। अभी भी ऐसे बहुत सारे शिक्षक हैं जो संलग्न पाठ योजनाओं से अवगत नहीं हैं। अतः संकुल समन्वयक और संकुल प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि-

1. संकुल बैठक में इन पाठ योजनाओं पर विस्तृत चर्चा हो और हर शिक्षक को इन चर्चाओं में शामिल होने के बराबर अवसर मिल रहे हों।
2. समेकित आकलन में आए सवालों की प्रकृति पर चर्चा, बच्चों के स्तर, कक्षा में कार्य करने के तरीकों पर और शिक्षकों द्वारा पाठ पढ़ाए गए तरीकों पर चर्चा कि जाये।
3. चर्चा पत्र में दी गई पाठ योजनाओं पर चर्चा।

पाठ योजनाओं पर पुख्ता तरीके से बातचीत हेतु इस माह में पाठ योजना के विश्लेषण हेतु कुछ सुझात्मक बिन्दु नीचे दिये गए हैं। इन बिन्दुओं के आधार पर शिक्षक पाठ योजना का विश्लेषण कर अपनी कक्षा के संदर्भ अनुसार इन योजनाओं को अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं या कुछ बदलाव भी कर सकते हैं।

- सिखायी जाने वाली अवधारणा के लिए विद्यार्थियों को आने वाले आवश्यक पूर्व ज्ञान और उनके स्तर की पहचान।
- हर दिन करवाई जाने वाली गतिविधि का सीखने के प्रतिफल (LO) तक पहुँचने के लिए प्रगति (progression), निरंतरता और सीखने के प्रतिफल के साथ जुड़ाव (alignment) ज़रूर देखें और समझें।
- विद्यार्थी को नयी अवधारणा से परिचित करवाने का तरीका जैसे – संदर्भित पूर्वज्ञान का प्रयोग आदि।

- विषय की प्रकृति के साथ जुड़ाव में शिक्षार्थी की आवश्यकता (Learner need) को ध्यान में रखकर केन्द्रित गतिविधि का होना, जैसे – मूर्तता से अमूर्तता की ओर बढ़ना।
- पुख्ता समझ बनाने के लिए गतिविधियों की विविधता और जटिलता हो।
- अलग-अलग तरह के संसाधन (resources) जैसे – सहायक शिक्षण सामग्री(TLM), अभ्यास पत्रक, चलित पट्ट(running board) कक्षा में कर के देखने के अवसर, सवाल- जवाब के माध्यम से बातचीत आदि का प्रयोग होना।
- अलग-अलग स्तर के बच्चों के लिए उनके स्तरानुसार गतिवधियाँ और सवाल।
- कक्षा स्तर के बच्चों के लिए उच्च स्टार की सोच (Higher order Thinking) वाले सवालों का होना।
- दिनवार या एक उप अवधारणा से दूसरी अवधारणा पर जाने से पहले आकलन करना।
- अवधारणा पर पूरा कार्य हो जाने के बाद आकलन की कक्षा में अधिकतम बच्चे अवधारणा संबन्धित सीखने के प्रतिफल (Los) सीख पाएँ या नहीं।

फरवरी माह में पढ़ाये जाने वाले पाठों की योजना कक्षावार नीचे दिये गए लिंक में संलग्न है।

क्रमांक	कक्षा	इस माह में कार्य किए जाने वाले पाठों के नाम
1	पहली	आंकड़ों की समझ
2	दूसरी	आंकड़ों की समझ
3	तीसरी	हमारे देवनागरी अंक
4	चौथी	पैटर्न और पहेलियाँ
5	पाँचवी	पैटर्न और पजल्स
6	छठवीं	सांख्यिकी
7	सातवीं	सममिति
8	आठवीं	क्षेत्रमिति

ऊपर दिये गए बिन्दुओं के आधार पर पाठ योजना को देखते हुए चर्चा सुनिश्चित करें।

एजेंडा सात: विशेष कोचिंग कक्षाओं का नियमित संचालन

इस वर्ष बच्चों में हुए लर्निंग लोस को कम करने हेतु मिशन लर्निंग आउटकम कम्पलीशन कार्यक्रम चलाया जा रहा है. इस कार्यक्रम के अंतर्गत उच्च प्राथमिक से लेकर हायर सेकन्डरी स्तर तक के सभी शालाओं में विशेष कोचिंग कक्षाओं का आयोजन किया जाना है. ये कोचिंग कक्षाएं शाला की आवश्यकता अनुसार महत्वपूर्ण विषयों के लिए संचालित की जा रही होंगी. कोचिंग के लिए शाला समय से अतिरिक्त समय में समुदाय द्वारा निर्धारित सुरक्षित स्थान में कक्षाओं का संचालन किया जा रहा होगा. इसमें सहयोग के लिए शिक्षक भी आसपास के स्कूलों के जो वहीं आसपास निवासरत हों, की सेवाएं ली जा रही होंगी. इसमें अध्यापन कर रहे शिक्षकों को प्रति विद्यार्थी पचास रुपए प्रति माह के मान से मानदेय की भी व्यवस्था की गयी है. यह मानदेय प्राप्त करने हेतु अपने कोचिंग कक्षाओं की उपस्थिति के प्रमाण के रूप में इसके लिए तैयार एप्प में नियमित रिपोर्टिंग एवं फोटो अपलोड करने होंगे. (Mission LoC coaching inspection app) सभी मिडिल स्कूल, सभी हाईस्कूल, सभी हायर सेकेंडरी स्कूल के संस्था प्रमुखों को प्ले स्टोर में जाकर डाउनलोड करना है और आपके विद्यालय में चल रहे प्रतिदिन के उपचारात्मक शिक्षण की जानकारी को इस ऐप के माध्यम से भेजना है तभी प्रति विद्यार्थी एक माह का ₹50 के हिसाब से 3 माह का डेढ़ सौ रुपया 150/- आपके स्कूल के खाते में आएगा. यह राशि स्कूल समय के पहले या स्कूल समय के बाद में उपचारात्मक शिक्षण दिए जाने पर मिलेगा. इसमें प्रतिदिन उपस्थिति भेजनी है और एक फोटोग्राफ भेजना है क्योंकि यह लोकेशन बेस्ट ऐप है इसलिए स्कूल से ही यह जानकारी भेजी जानी है. सभी संकुल प्राचार्य को इसका प्रशिक्षण दिया जा चुका है. सभी संकुल समन्वयकों को भी इसका प्रशिक्षण दिया जा चुका है. सभी प्रधानपाठक को विशेष रूप से आमंत्रित कर यह ऐप डाउनलोड कराया जाए और प्रतिदिन की गतिविधियों को भेजा जाए.)

एजेंडा आठ: संकुल स्तर पर प्रशिक्षित मेंटर्स के साथ कार्य

इस वर्ष संभाग स्तर से लेकर संकुल स्तर तक फाउंडेशन लिटरेसी एवं न्यूमेरेसी (FLN) पर चयनित मेंटर्स का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर लिया गया है. प्रत्येक संभाग से लेकर जिले, विकासखंड एवं संकुल में अब आपके पास सहयोग हेतु मेंटर्स उपलब्ध है. इन मेंटर्स का साथ अब बिलकुल भी नहीं छोड़ना है. राज्य में मूलभूत कौशलों के विकास हेतु विभिन्न स्तरों पर निम्नानुसार मेंटर्स चयनित करते हुए उनका क्षमता विकास किया जा रहा है-

- राज्य स्तर पर अकादमिक टास्क फ़ोर्स (Academic Task Force- ATF)
- संभाग स्तर पर प्रत्येक संभाग में चार -चार मेंटर्स (Division level Mentors-DLM) का चिह्नांकन
- जिले स्तर पर 8-10 जिला स्तरीय टास्क फ़ोर्स (District Task Force- DTF) का चिह्नांकन
- विकासखंड स्तर पर प्रत्येक विकासखंड में दो-दो मेंटर्स (Block level Mentors-BLM) का चिह्नांकन
- संकुल स्तर पर प्रत्येक संकुल में दो-दो मेंटर्स (Cluster level Mentors-CLM) का चिह्नांकन

राज्य स्तर के अकादमिक टास्क फ़ोर्स एवं जिले स्तर पर चयनित जिला टास्क फ़ोर्स का बारह दिवसीय क्षमता विकास केंद्र में स्कूल शिक्षा मंत्रालय द्वारा आनलाइन माध्यम से कर लिया गया है | इस क्षमता विकास कार्यक्रम को नीचे दिए गये यू-ट्यूब लिंक के माध्यम से समय निकालकर देख और समझ लेना चाहिए -
https://www.youtube.com/playlist?list=PLdbquJSZ3AcSzsdBMn_YXSuELVUkZbyW7

FLN पर इस वर्ष बहुत अधिक कार्य किया जाना है और प्रत्येक स्तर पर बेहतर एवं विशेषज्ञ मेंटर्स की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है. अभी तक जितने भी मेंटर प्रशिक्षित हुए हैं वे ऊपर दिए गए लिंक को संभाल कर समय निकालकर प्रतिदिन के कार्यक्रम को देखकर उस पर आधारित नोट बनाकर अपने अपने क्षेत्र में कार्य प्रारंभ करेंगे. इनमें से बेहतर हिस्सों को शिक्षकों को भी देखने के अवसर देंगे.
मेंटर प्रशिक्षण के उपरान्त अब पूरे राज्य में निम्नलिखित परिवर्तन स्पष्ट और अनिवार्यतः दिखाई देना चाहिए-

I. बालवाडी से लेकर प्राथमिक स्तर पर सभी कक्षाओं में निपुण भारत के लक्ष्य का पोस्टर एवं उनके अनुरूप कार्य
II. पाठ्य-पुस्तक का उपयोग कर भाषा एवं गणित के विभिन्न गतिविधियों को अनिवार्यतः कक्षाओं में करवाना
III. सभी शालाओं में सभी बच्चों द्वारा मुस्कान पुस्तकालय का नियमित उपयोग एवं सौ दिन सौ कहानियां
IV. स्थानीय भाषा का कक्षा में उपयोग हेतु वार्तालाप पुस्तिका एवं अन्य सभी आवश्यक सामग्री तैयार कर रखना
V. समुदाय के साथ मिलकर बड़े-बुजुर्गों के साथ स्थानीय कहानियों को समय समय पर सुनाया जाना
VI. निकट के आंगनबाडी में बच्चों को सीखने में सहयोग हेतु प्राथमिक शालाओं द्वारा समर्थन
VII. अंगना म शिक्षा के अंतर्गत चयनित स्मार्ट माताओं का सीखने-सिखाने में आंगनबाडी/ स्कूल में सहयोग
VIII. खिलौनों पर आधारित पुस्तक पढ़कर उनमें सुझाई गए खिलौनों को बनाकर खिलौना कार्नर बनाक्र उपयोग
IX. सभी शालाओं में सभी कक्षाओं में सीखने के लिए सजावट अनुरूप बेहतर प्रभावी प्रिंट-रिच वातावरण
X. सभी बच्चों को सुघ्घर पढ़वईया/ असर टूल अनुरूप बेहतर गुणवत्ता के साथ तैयार करना

किसी भी क्षमता विकास कार्यक्रम का उद्देश्य होता है कि उस कार्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप प्रतिभागी अपने आप में इतनी क्षमता विकसित कर ले कि उसके बाद उसे बाहर से किसी निर्देश या मार्गदर्शन की आवश्यकता न हो और वह स्वप्रेरित होकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए टीम को साथ लेकर आगे बढ़े.
हम सभी मेंटर्स से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने आपको एक दक्ष मेंटर के रूप में विकसित कर सकेंगे, अपना क्षमता विकास करते रहेंगे एवं स्वयं और अपने मेंटी को अपने सभी विद्यार्थियों में अपेक्षित कौशल विकसित करने में हमेशा सक्रिय सहयोग देते रहेंगे. सभी स्तर पर मेंटर और मेंटी के बीच बेहतर नेटवर्किंग स्थापित हो जाना चाहिए.

एजेंडा नौ: विकासखंड स्तर पर पीएलसी के माध्यम से कार्य

इस वर्ष विभिन्न विकासखंडों को रुपए दस हजार स्वीकृत करते हुए पीएलसी के माध्यम से विभिन्न गुणवत्ता संबंधी कार्यों को पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं. जिले में प्रत्येक विकासखंड को इनमें से किसी एक विषय का चयन कर उसमें व्यक्तिगत रुचि लेकर कार्य करना होगा और अपने विकासखंड में एक मोडल विकसित कर दिखाना होगा. प्रत्येक जिले को बिना डूप्लिकेशन इनमें से कोई एक लेना होगा-

I. विकासखंड के सभी प्राथमिक शालाओं को निकट के आंगनबाडी में मेंटर के रूप में सहयोग देते हुए वहां अधिक से अधिक बच्चों को दर्ज कर उनको सीखने में स्मार्ट माताओं के माध्यम से सहयोग देना

II. प्राथमिक शालाओं में खिलौनाघर की स्थापना कर बच्चों को सीखने में खिलौनों का उपयोग करने हेतु दिशानिर्देश एवं मोडल तैयार कर विकासखंड के सभी स्कूलों में खिलौनाघर का सीखने में उपयोग

III. अपने विकासखंड में FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने के दिशा में नवाचारी प्रयास और उसके आधार पर किए गए सुधारों का दस्तावेजीकरण कर सभी जिलों / विकासखंडों को साझा करना

IV. <u>ग्रीष्मावकाश में समर कैम्प के आयोजन हेतु गतिविधि पुस्तिका तैयार का अपने क्षेत्र के सभी शालाओं को आगामी सत्र में समर कैम्प का आयोजन करने की तैयारी</u>

V. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरुप निजी एवं शासकीय स्कूलों के बीच क्षमता विकास कार्यक्रमों के आयोजन हेतु ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल के माध्यम से विकासखंड में निजी एवं शासकीय स्कूलों के शिक्षकों का पीएलसी बनाकर टेक्नोलोजी का उपयोग कर एक साथ क्षमता विकास कार्यक्रमों का आयोजन हेतु राज्य के समक्ष मोडल विकसित करना

VI. विकासखंड के समस्त उच्च प्राथमिक शालाओं में "सौ दिन सौ कहानियाँ" का नियमित आयोजन कर बच्चों के रीडिंग स्पीड में वृद्धि करना

VII. समस्त प्राथमिक शालाओं में शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों का क्षमता विकास करते हुए उनके माध्यम से शालाओं में बच्चों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन कर बच्चों की उपलब्धि में सुधार करना

VIII. सुघ्घर पढ़वईया कार्यक्रम में अंतर्गत निर्धारित क्रायटेरिया को सभी शालाओं में पूरा करने हेतु एक सक्रिय पीएलसी तैयार कर उनके माध्यम से समस्त शालाओं को इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से जोड़ते हुए सफल बनाना

IX. कक्षाओं में नियमित आकलन में निकलर एप्प का नियमित उपयोग सुनिश्चित करने हेतु रणनीति का निर्धारण कर शत प्रतिशत शालाओं में इस एप्प का सफलतापूर्वक उपयोग

X. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में विज्ञान के प्रयोगों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं को विकसित करने हेतु विकासखंड की समस्त शालाओं में पी एल सी के साथ कार्य

आप सभी शिक्षक अपने विकासखंड में बी आर सी सी से संपर्क कर चुने गए विषय में पी एल सी के रूप में कार्य करने एवं उस विषय से संबंधित बेहतर सामग्री एवं आइडिया को साझा करते हुए इस योजना के अंतर्गत एक ऐसा मोडल विकसित करने का प्रयास करें जिसे पूरे राज्य में लागू किया जा सके.

सभी विकासखंड स्रोत समन्वयकों को उनके कार्यों के प्रस्तुतीकरण के लिए राज्य स्तर पर आमंत्रित किया जाएगा और उनके कार्यों की जानकारी साझा करने के अवसर दिए जाएँगे. ध्यान रखें कि इस प्रकार के कार्यों को अच्छे से संपन्न करने पर आपको राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार के लिए आवेदन भेजने में आसानी हो सकेगी. हम उम्मीद करते हैं कि इन योजना के अंतर्गत सभी विकासखंडों में बेहतर कार्य प्रदर्शित किया जाएगा.

एजेंडा दस: परीक्षा के लिए टिप्स

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के दौरान बच्चों को ये दस महत्वपूर्ण टिप्स प्राप्त हुए हैं. इन टिप्स को आप स्वयं भी पालन करने का प्रयास करें, अपने बच्चों के साथ साझा करें और स्कूल में विद्यार्थियों के साथ इन टिप्स की जानकारी देते हुए नियमित फोलो-अप लेते रहें.

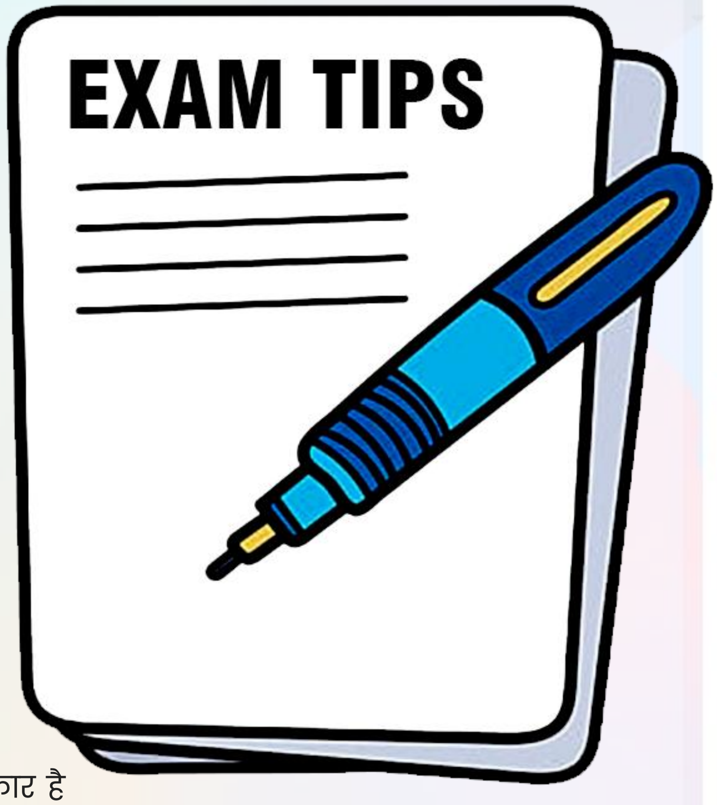

1. सोशल मीडिया के प्रभाव से बचने के लिए सबसे पहले निर्णय ये करना है कि आप स्मार्ट हैं कि गैजेट स्मार्ट हैं. गैजेट्स का गुलाम बनने से बचें, अपनी स्वतंत्रता को पहचानें। गैजेट्स की उपयोगिता और आवश्यकता को समझें.
2. 'कुछ पाने के लिए शॉर्टकट रास्ता नहीं अपनाना चाहिए. कुछ बच्चे परीक्षा में चीटिंग करने पर अधिक ध्यान देते हैं. ऐसे बच्चे अगर अपना ध्यान सृजनात्मक और सकारात्मक क्षेत्र में लगाएं तो बेहतर परिणाम मिलेंगे.
3. नियत समय पर कार्य को नहीं करने से कार्यों का ढेर लग जाता है. काम से कभी थकान नहीं होती, संतोष मिलता है. नोट करें कि किस काम को किस समय पर करना है.
4. ध्यान और लगन के साथ परीक्षा दें. यह उसी प्रकार है जैसे एक क्रि केट खिलाड़ी केवल अपने खेल पर ध्यान देता है न कि आसपास के शोर-शराबे पर. खिलाड़ी दर्शकों के दबाव में नहीं खेलता है.
5. एक मां पर कई तरह के काम का दबाव होता है. वह उसे कैसे मैनेज करती है इसको ध्यान से देखना चाहिए. मां का समय प्रबंधन बहुत ही अच्छा होता है. मां की गतिविधि को अनुसरण करने से समय प्रबंधन का ज्ञान होता है.
6. बच्चों को अपनी क्षमताओं को कम कर नहीं आंकना चाहिए. अपने सामर्थ्य को जानने वाले सामर्थ्यवान बनते हैं.
7. कागज पर अपने कार्य का विश्लेषण करें. मेहनती बच्चों को नकल करने वालों से परेशानी होती है.
8. जिंदगी में डगर-डगर पर आपको परीक्षा देनी पड़ती है. नकल से जिंदगी नहीं बन सकती है.
9. आलोचना से हम समृद्ध होते हैं, आलोचना बहुत मूल्यवान होती है. मेहनती लोग आरोपों की परवाह नहीं करते.
10. हर बच्चे में कोई न कोई अद्भुत क्षमता होती है. अपनी क्षमता को खोए बिना अपनी क्षमता को बढ़ाना है।. टेक्नोलॉजी का फास्टिंग करना सीखें. हमें अपना फोकस छोड़ना नहीं चाहिए. परिवार भी डिजिटल दुनिया में फंस जा रहे हैं. घर में भी नो टेक्नोलॉजी जोन बनाए. तकनीक का गुलाम बनने से बचें. बहुमुखी होना जरूरी होता है.